ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL
A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION
CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE: 11. 06 .2020

पाठ नाम - नशा

कहानीकार परिचय:

मुंशी प्रेमचंद (जन्म- 31 जुलाई, 1880 - मृत्यु- 8 अक्टूबर, 1936) भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं जिनके युग का विस्तार सन् 1880 से 1936 तक है। यह कालखण्ड भारत के इतिहास में बहुत महत्त्व का है। इस युग में भारत का स्वतंत्रता-संग्राम नई मंज़िलों से गुजरा। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, जिम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएं नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ।

जन्म और विवाह

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गांव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। प्रेमचंद के पिताजी मुंशी अजायब लाल और माता आनन्दी देवी थी। प्रेमचंद का बचपन गांव में बीता था। प्रेमचंद का कुल दरिद्र कायस्थों का था, जिनके पास क़रीब छ: बीघा जमीन थी और जिनका परिवार बड़ा था। प्रेमचंद के पितामह, मुंशी गुरुसहाय लाल, पटवारी थे। उनके पिता, मुंशी अजायब लाल, डाकमुंशी थे और उनका वेतन लगभग पच्चीस रुपए मासिक था। उनकी मां आनन्द देवी सुन्दर सुशील और सुघड़ महिला थीं। जब प्रेमचंद पंद्रह वर्ष के थे, उनका विवाह हो गया। वह विवाह उनके सौतेले नाना ने तय किया था। सन 1905 के अंतिम दिनों में आपने शिवरानी देवी से शादी कर ली। शिवरानी देवी बाल-विधवा थीं। यह कहा जा सकता है कि दूसरी

शादी के पश्चात् इनके जीवन में परिस्थितियां कुछ बदली और आय की आर्थिक तंगी कम हुई। इनके लेखन में अधिक सजगता आई। प्रेमचन्द की पदोन्नति हुई तथा यह स्कूलों के डिप्टी इन्सपेक्टर बना दिए गए।

शिक्षा

गरीबी से लड़ते हुए प्रेमचंद ने अपनी पढ़ाई मैट्रिक तक पहुंचाई। जीवन के आरंभ में ही इन्हें गांव से दूर वाराणसी पढ़ने के लिए नंगे पांव जाना पड़ता था। इसी बीच में इनके पिता का देहान्त हो गया। प्रेमचंद को पढ़ने का शौक था, आगे चलकर वह वकील बनना चाहते थे, मगर गरीबी ने इन्हें तोड़ दिया। प्रेमचंद ने स्कूल आने-जाने के झंझट से बचने के लिए एक वकील साहब के यहां ट्यूशन ले लिया और उसी के घर में एक कमरा लेकर रहने लगे। इनको ट्यूशन का पांच रुपया मिलता था। पांच रुपए में से तीन रुपए घर वालों को और दो रुपए से प्रेमचंद अपनी जिन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाते रहे। प्रेमचन्द महीना भर तंगी और अभाव का जीवन बिताते थे। इन्हीं जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रेमचन्द ने मैट्रिक पास किया। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य, पर्सियन और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की थी।

रचनाएँ

उपन्यास

- *असरारे मआबिद*- उर्दू साप्ताहिक *आवाज-ए-खल्क़* में ८ अक्टूबर १९०३ से १ फरवरी १९०५ तक धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। कालांतर में यह हिंदी में *देवस्थान रहस्य* नाम से प्रकाशित हुआ।
- *हमखुर्मा व हमसवाब*- इसका प्रकाशन १९०७ ई. में हुआ। बाद में इसका हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से प्रकाशित हुआ।
- *किशना*- इसके संदर्भ में अमृतराय लिखते हैं कि- "उसकी समालोचना अक्तूबर-नवंबर १९०७ के 'ज़माना' में निकली।" इसी आधार पर 'किशना' का प्रकाशन वर्ष १९०७ ही कल्पित किया गया।

- *रूठी रानी*- इसे सन् १९०७ में अप्रैल से अगस्त महीने तक *ज़माना* में प्रकाशित किया गया।
- *जलवए ईसार*- यह सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ था।
- *सेवासदन*- १९१८ ई. में प्रकाशित सेवासदन प्रेमचंद का हिंदी में प्रकाशित होने वाला पहला उपन्यास था। यह मूल रूप से उन्होंवने 'बाजारे-हुस्नं' नाम से पहले उर्दू में लिखा गया लेकिन इसका हिंदी रूप 'सेवासदन' पहले प्रकाशित हुआ। यह स्त्री समस्या पर केंद्रित उपन्यास है जिसमें दहेज-प्रथा, अनमेल विवाह, वेश्यावृत्ति, स्त्री-पराधीनता आदि समस्याओं के कारण और प्रभाव शामिल हैं। डॉ रामविलास शर्मा 'सेवासदन' की मुख्यण समस्याल भारतीय नारी की पराधीनता को मानते हैं।
- *प्रेमाश्रम* (१९२२)- यह किसान जीवन पर उनका पहला उपन्यास है। इसका मसौदा भी पहले उर्दू में 'गोशाए-आफियत' नाम से तैयार हुआ था लेकिन इसे पहले हिंदी में प्रकाशित कराया। यह अवध के किसान आंदोलनों के दौर में लिखा गया। इसके संदर्भ में वीर भारत तलवार *किसान राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्द:1918-22* पुस्तक में लिखते हैं कि- "1922 में प्रकाशित 'प्रेमाश्रम' हिंदी में किसानों के सवाल पर लिखा गया पहला उपन्यास है। इसमें सामंती व्यवस्था के साथ किसानों के अंतर्विरोधों को केंद्र में रखकर उसकी परिधि के अंदर पड़नेवाले हर सामाजिक तबके का-ज़मींदार, ताल्लुकेदार, उनके नौकर, पुलिस, सरकारी मुलाजिम, शहरी मध्यवर्ग-और उनकी सामाजिक भूमिका का सजीव चित्रण किया गया है।"
- *रंगभूमि* (१९२५)- इसमें प्रेमचंद एक अंधे भिखारी सूरदास को कथा का नायक बनाकर हिंदी कथा साहित्य। में क्रांतिकारी बदलाव का सूत्रपात करते हैं।
- *निर्मला* (१९२५)- यह अनमेल विवाह की समस्याओं को रेखांकित करने वाला उपन्यास है।
- *कायाकल्प* (१९२६)

- *अहंकार* - इसका प्रकाशन कायाकल्प के साथ ही सन् १९२६ ई. में हुआ था। अमृतराय के अनुसार यह "अनातोल फ्रांस के 'थायस' का भारतीय परिवेश में रूपांतर है।"
- *प्रतिज्ञा* (१९२७)- यह विधवा जीवन तथा उसकी समस्याओं को रेखांकित करने वाला उपन्यास है।
- *गबन* (१९२८)- उपन्यास की कथा रमानाथ तथा उसकी पत्नी जालपा के दांपत्य जीवन, रमानाथ द्वारा सरकारी दफ्तर में ग़बन, जालपा का उभरता व्यक्तित्व इत्यादि घटनाओं के इर्द-गिर्द घूमती है।
- *कर्मभूमि* (१९३२)-यह अछूत समस्या, उनका मंदिर में प्रवेश तथा लगान इत्यादि की समस्या को उजागर करने वाला उपन्यास है।
- *गोदान* (१९३६)- यह उनका अंतिम पूर्ण उपन्यास है जो किसान-जीवन पर लिखी अद्वितीय रचना है। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद 'द गिफ्ट ऑफ़ काओ' नाम से प्रकाशित हुआ।
- *मंगलसूत्र* (अपूर्ण)- यह प्रेमचंद का अधूरा उपन्यानस है जिसे उनके पुत्र अमृतराय ने पूरा किया। इसके प्रकाशन के संदर्भ में अमृतराय प्रेमचंद की जीवनी में लिखते हैं कि इसका-"प्रकाशन लेखक के देहान्त के अनेक वर्ष बाद १९४८ में हुआ।"

कहानी

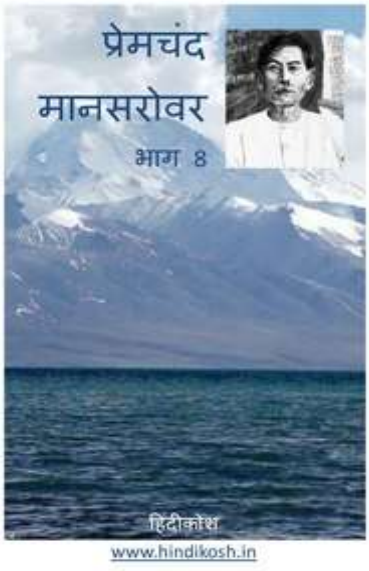

मानसरोवर

इनकी अधिकतर कहानियोँ में निम्न व मध्यम वर्ग का चित्रण है। डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद की संपूर्ण हिंदी-उर्दू कहानी को प्रेमचंद कहानी रचनावली नाम से प्रकाशित कराया है। उनके अनुसार प्रेमचंद ने कुल ३०१ कहानियाँ लिखी हैं जिनमें ३ अभी अप्राप्य हैं। प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह *सोज़े वतन*(राष्ट्र का विलाप) नाम से जून १९०८ में प्रकाशित हुआ। इसी संग्रह की पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रतन को आम तौर पर उनकी पहली प्रकाशित कहानी माना जाता रहा है। डॉ॰ गोयनका के अनुसार कानपुर से निकलने वाली उर्दू मासिक पत्रिका *ज़माना* के अप्रैल अंक में प्रकाशित सांसारिक प्रेम और देश-प्रेम (इश्के दुनिया और हुब्बे वतन) वास्तव में उनकी पहली प्रकाशित कहानी है।

उनकी कुछ कहानियों की सूची नीचे दी गयी है-

1. अन्धेर 2. अनाथ लड़की	21. क्रिकेट मैच 22. कवच	41. देवी 42. देवी - एक और	61. पुत्र-प्रेम 62. पैपुजी 63.	81. मुबारक बीमारी	101. स्त्री और पुरूष 102. स्वर्ग की

3. अपनी करनी
4. अमृत
5. अलग्योझा
6. आख़िरी तोहफ़ा
7. आखिरी मंजिल
8. आत्म-संगीत
9. आत्माराम
10. दो बैलों की कथा
11. आल्हा
12. इज्जत का खून
13. इस्तीफा
14. ईदगाह
15. ईश्वरीय न्याय
16. उद्धार
17. एक ऑंच की कसर
18. एक्ट्रेस

23. क़ातिल
24. कोई दुख न हो तो बकरी खरीद ला
25. कौशल़
26. खुदी
27. गैरत की कटार
28. गुल्ली ी डण्डा
29. घमण्ड का पुतला
30. ज्यो ति
31. जेल
32. जुलूस
33. झांकी
34. ठाकुर का कुआं
35. तेंतर
36. त्रिया-चरित्र
37. तांगेवाले की बड़
38. तिरसूल
39. दण्ड
40. दुर्गा का

कहानी
43. दूसरी शादी
44. दिल की रानी
45. दो सखियाँ
46. धिक्कार
47 धिक्कार - एक और कहानी
48. नेउर
49. नेकी
50. नबी़ का नीति-निर्वाह
51. नरक का मार्ग
52. नैराश्य
53. नैराश्य लीला
54. नशा
55. नसीहतों का दफ्तर
56. नाग-

प्रतिशोध
64. प्रेम-सूत्र
65. पर्वत-यात्रा
66. प्रायश्चित
67. परीक्षा
68. पूस की रात
69. बैंक का दिवाला
70. बेटोंवाली विधवा
71. बड़े घर की बेटी
72. बड़े बाबू
73. बड़े भाई साहब
74. बन्द दरवाजा
75. बाँका जमींदार
76. बोहनी
77. मैकू

82. ममता
83. माँ
84. माता का ह्रदय
85. मिलाप
86. मोटेराम जी शास्त्री
87. स्वर्ग की देवी
88. राजहठ
89. राष्ट्र का सेवक
90. लैला
91. वफ़ा का ख़जर
92. वासना की कड़ियाँ
93. विजय
94. विश्वास
95. शंखनाद

देवी
103. स्वांग
104. सभ्यता का रहस्य
105. समर यात्रा
106. समस्या
107. सैलानी बन्दर
108. स्वानमिनी
109. सिर्फ एक आवाज
110. सोहाग का शव
111. सौत
112. होली की छुट्टी
113.नम क का दरोगा
114.गृह-दाह
115.सवा सेर गेहुँ नमक का दरोगा
116.दुध का दाम
117.मुक्तिधन
118.कफ़न

19. कप्तान साहब 20. कर्मों का फल	मन्दिर	पूजा 57. नादान दोस्त 58. निर्वासन 59. पंच परमेश्वर 60. पत्नी से पति	78. मन्त्र 79. मन्दिर और मस्जिद 80. मनावन	96. शूद्र 97. शराब की दुकान 98. शान्ति 99. शादी की वजह 100. शान्ति	

कहानी संग्रह-

1. **सप्तसरोज- १९१७ में इसके पहले संस्करण की भूमिका लिखी गई थी। *सप्तसरोज* में प्रेमचंद की सात कहानियाँ संकलित हैं। उदाहरणतः *बड़े घर की बेटी*, *सौत*, *सज्जनता का दण्ड*, *पंच परमेश्वर*, *नमक का दारोगा*, *उपदेश* तथा *परीक्षा* आदि।**
2. **नवनिधि- यह प्रेमचंद की नौ कहानियों का संग्रह है। जैसे- राजा हरदौल, रानी सारन्धा, मर्यादा की वेदी, पाप का अग्निकुण्ड, जुगुनू की चमक, धोखा, अमावस्या की रात्रि, ममता, पछतावा आदि।**
3. **'प्रेमपूर्णिमा',**
4. **'प्रेम-पचीसी',**
5. **'प्रेम-प्रतिमा',**
6. **'प्रेम-द्वादशी',**
7. **समरयात्रा- इस संग्रह के अंतर्गत प्रेमचंद की ११ राजनीतिक कहानियों का संकलन किया गया है। उदाहरणस्वरूप-जेल, कानूनी कुमार, पत्नी से पति, लांछन, ठाकुर का कुआँ, शराब की दुकान, जुलूस, आहुति, मैकू, होली का उपहार, अनुभव, समर-यात्रा आदि।**

8. मानसरोवर' : भाग एक व दो और 'कफन'। उनकी मृत्युष के बाद उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' शीर्षक से ८ भागों में प्रकाशित हुई।

नाटक

1. *संग्राम* (१९२३)- यह किसानों के मध्य व्याप्त कुरीतियाँ तथा किसानों की फिजूलखर्ची के कारण हुआ कर्ज और कर्ज न चुका पाने के कारण अपनी फसल निम्न दाम में बेचने जैसी समस्याओं पर विचार करने वाला नाटक है।
2. *कर्बला* (१९२४)
3. *प्रेम की वेदी* (१९३३)

ये नाटक शिल्प और संवेदना के स्तरर पर अच्छेट हैं लेकिन उनकी कहानियों और उपन्याकसों ने इतनी ऊँचाई प्राप्तर कर ली थी नाटक के क्षेत्र में प्रेमचंद को कोई खास सफलता नहीं मिली। ये नाटक वस्तुरतः संवादात्मीक उपन्यासास ही बन गए हैं।

कथेतर साहित्य

1. प्रेमचंद : विविध प्रसंग- यह अमृतराय द्वारा संपादित प्रेमचंद की कथेतर रचनाओं का संग्रह है। इसके पहले खंड में प्रेमचंद के वैचारिक निबंध, संपादकीय आदि प्रकाशित हैं। इसके दूसरे खंड में प्रेमचंद के पत्रों का संग्रह है।
2. प्रेमचंद के विचार- तीन खंडों में प्रकाशित यह संग्रह भी प्रेमचंद के विभिन्न निबंधों, संपादकीय, टिप्पणियों आदि का संग्रह है।
3. साहित्यद का उद्देश्यीइसी नाम से उनका एक निबंध-संकलन भी प्रकाशित हुआ है जिसमें ४० लेख हैं।
4. चिट्ठी-पत्री- यह प्रेमचंद के पत्रों का संग्रह है। दो खंडों में प्रकाशित इस पुस्तक के पहले खंड के संपादक अमृतराय और मदनगोपाल हैं। इस पुस्तक में प्रेमचंद के दयानारायन निगम, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र आदि समकालीन

लोगों से हुए पत्र-व्यवहार संग्रहित हैं। संकलन का दूसरा भाग अमृतराय ने संपादित किया है।

प्रेमचंद के कुछ निबंधों की सूची निम्नलिखित है-

1. पुराना जमाना नया जमाना,
2. स्वाराज के फायदे,
3. कहानी कला (1,2,3),
4. कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार,
5. हिंदी-उर्दू की एकता,
6. महाजनी सभ्येता,
7. उपन्या स
8. जीवन में साहित्य का स्थातन।

अनुवाद

प्रेमचंद एक सफल अनुवादक भी थे। उन्होंसने दूसरी भाषाओं के जिन लेखकों को पढ़ा और जिनसे प्रभावित हुए, उनकी कृतियों का अनुवाद भी किया। उन्होंने 'टॉलस्टॉसय की कहानियाँ(1923), गाल्सनवर्दी के तीन नाटकों का *हड़ताल* (1930), *चाँदी की डिबिया* (1931) और *न्याहय*(1931) नाम से अनुवाद किया। उनका रतननाथ सरशार के उर्दू उपन्या1स*फसान-ए-आजाद* का हिंदी अनुवाद *आजाद कथा* बहुत मशहूर हुआ।

विविध

1. बाल साहित्य : रामकथा, कुत्ते की कहानी, दुर्गादास
2. विचार : प्रेमचंद : विविध प्रसंग, प्रेमचंद के विचार (तीन खंडों में)

संपादन

प्रेमचन्द ने 'जागरण' नामक समाचार पत्र तथा 'हंस' नामक मासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन किया था। उन्होंने सरस्वती प्रेस भी चलाया था। वे उर्दू की पत्रिका 'जमाना' में नवाब राय के नाम से लिखते थे।

विशेषताएँ

मन्नू भंडारी प्रेमचंद के विषय में बताती हैं कि-"साहित्य के प्रति और साहित्य के हर दृष्टि के प्रति यानी चाहे राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक सभी को उन्होंने जिस तरह अपनी रचनाओं में समेटा और खासकरके एक आम आदमी को, एक किसान को, एक आम दलित वर्ग के लोगों को वह अपने आप में एक उदाहरण था. साहित्य में दलित विमर्श की शुरुआत शायद प्रेमचंद की रचनाओं से हुई थी."

कहानी का सारांश

नशा कहानी प्रेमचंद की द्वारा रचित कहानी है , जिसमें उन्होंने बीर के माध्यम से यह संदेश दिया है कि धन में कितना नशा होता है | बीर के साथ भी यही होता है | बीर गरीब क्लर्क का बेटा है | ईश्वरी जमींदारी घर का लड़का है | बीर हमेशा हीजमींदारों की बुराई करता | वह हमेशा ही जमींदारों को खून चूसने वाला जोंक कहता | लेकिन ईश्वरी कभी भी इसका विरोध नहीं करता | बीर के प्रति उसका व्यवहार नरम ही रहता | इस बार की दशहरे की छुट्टियों में बीर ने घर न जाने का फैसला किया , क्यूंकि उसके पास पैसे भीन थे , और वह अपने परिवार वालों को कोई कष्ट भी नहीं देना चाहता था | **"मैं जानता हूँ, वे मुझे जो कुछ देते है वह उनकी हैसियत से बहुत ज्यादा है |"** ऐसे समय में जब ईश्वरी उसे अपने घर चलने का आमंत्रण देता है , बीर इन्कार नहीं करता और उसके साथ चलने की तैयारी करने लगता है | लेकिन ईश्वरी उसे वहाँ जमींदारों की बुराई करने से मना करता है | इससे उसके घरवालों को बुरा लग सकता है | लेकिन बीर

इस बात के लिए राजी नहीं होता | वह कहता है **---" तो क्या तुम समझते हो मैं वहाँ *जाकर कुछ और हो* जाउँगा ?"**

ईश्वरी के घर पहुँचने पर बीर हक्का-बक्का रह जाता है | उसका घर मानों महल था | उसके घर में सारी सुविधाएँ थी | हर काम के लिए नौकर थे | ईश्वरी अपने परिवारवालों के सामने अपने मित्र का परिचय एक जमींदार पुत्र के रूप में करवाता है , जिसकी साल भर की कमाई ढाई लाख की है | और साथ ही वह यह भी कहता है कि बीर महात्मा गाँधी के भक्त है | और बीर भी उसकी बातों का विरोध करता हुआ नजर नहीं आता | **"पर न जाने क्या बात थी कि यह सफेद झूठ उस वक्त मुझे हास्यास्पद न जान पड़ा |"**

अब बीर गाँधी भक्त कुँवर साहब बन गया था | जिन जमींदारों की बुराई करते वह नहीं थकता था ,आज वह खुद उन्ही के जैसा ही जीवन जी रहा था | उन्ही के समान दुर्व्यवहार वह घर में काम करने वाले नौकरों के साथ करता था |

"मैंने भी पाँव बढ़ा दिए | कहार ने मेरे पाँव भी धोये | मेरा वह विचार न जाने कहाँ चला गया था | ..... मैंने ऐसी डांट लगायी कि उसने भी याद किया होगा |"

इन दोनों की छुट्टियाँ सैर-सपाटे में ही बीत गई | छुट्टी ख़त्म होने पर दोनों मित्र वापस प्रयाग जाने का निर्णय करते है | आरक्षण न मिलने के कारण गाड़ी के डिब्बे में काफी भीड़ थी | पाँव रखने की भी जगह न थी | ऐसे में एक गरीब की गठरी बार- बार बीर के चेहरे से रगड़ खा रहा था | इतने में क्रोध आ जाता है , और वह उसे ढकेल कर दो थप्पड़ मार देता है | यह देखकर गाड़ी में मौजूद सभी लोग बीर का विरोध करने लगते है ,और उसे तरह-तरह के बात सुनाने लगते है |

<u>“अगर इतने नाजुक मिजाज हो तो अव्वल दर्जे में क्यों नहीं बैठे |” ..... “अमीर होकर क्या आदमी अपनी इंसानियत बिल्कुल खो देता है|” ईश्वरी</u> भी उसे अंग्रेजी में कहता है- **<u>“What an idiot you are Bir”</u>** तब बीर का नशा धीरे- धीरे ख़त्म होने लगता है | यह **<u>नशा</u>** झूठी अमीरी और झूठे शान का है जो एक झटके में ही समाप्त हो जाता है |

बीर के चरित्र में खोखलापन है| वह अपनी वास्तविक पहचान को छोड़ कर दिखावे के लिए झूठी पहचान को अपनाता है |वह जो नहीं है, ईश्वरी के घर में बीर वह बन कर रहता है | जिसकी बुराई करते वहनहीं थकता था , वह स्वयं उन्हीके आचरण के अनुरूप खुद को बना लेता है |

NAME-PRITI TIWARI